# Mahesh mahajan

15 Jan 1986

11:32 PM

Nashik

**Model: Shani-Sadesati-Report** **Order No: 121194101**

# सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती हैं। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

| | |
|---|---|
| लिंग | पुल्लिंग |
| **जन्म तिथि** | **15/01/1986** |
| दिन | बुधवार |
| **जन्म समय** | **23:32:00 घंटे** |
| इष्ट | 40:47:42 घटी |
| **स्थान** | **Nashik** |
| राज्य | Maharashtra |
| देश | India |

| | |
|---|---|
| अक्षांश | 19:59:57 उत्तर |
| रेखांश | 73:47:24 पूर्व |
| मध्य रेखांश | 82:30:00 पूर्व |
| स्थानिक संस्कार | -00:34:50 घंटे |
| ग्रीष्म संस्कार | 00:00:00 घंटे |
| स्थानिक समय | 22:57:09 घंटे |
| वेलान्तर | -00:09:19 घंटे |
| साम्पातिक काल | 06:36:44 घंटे |
| सूर्योदय | 07:12:55 घंटे |
| सूर्यास्त | 18:15:34 घंटे |
| दिनमान | 11:02:39 घंटे |
| सूर्य स्थिति(अयन) | उत्तरायण |
| सूर्य स्थिति(गोल) | दक्षिण |
| ऋतु | शिशिर |
| सूर्य के अंश | 01:38:33 मकर |
| लग्न के अंश | 14:58:34 कन्या |

**अवकहड़ा चक्र**

| | |
|---|---|
| लग्न-लग्नाधिपति | कन्या - बुध |
| **राशि-स्वामी** | **मीन - गुरु** |
| **नक्षत्र-चरण** | **उ०भाद्रपद - 2** |
| नक्षत्र स्वामी | शनि |
| योग | परिघ |
| करण | कौलव |
| गण | मनुष्य |
| योनि | गौ |
| नाड़ी | मध्य |
| वर्ण | विप्र |
| वश्य | जलचर |
| वर्ग | सर्प |
| युँजा | अन्त्य |
| हंसक | जल |
| जन्म नामाक्षर | थ-थानसिंह |
| पाया(राशि-नक्षत्र) | ताम्र - लौह |
| सूर्य राशि(पाश्चात्य) | मकर |

# पंचांग

दादा का नाम _____:
पिता का नाम _____:
माता का नाम _____:
जाति _____:
गोत्र _____:

| कैलेंडर | वर्ष | मास | तिथि/प्रविष्टे |
|---|---|---|---|
| राष्ट्रीय | शक : 1907 | पौष | 25 |
| पंजाबी | संवत : 2042 | माघ | 2 |
| बंगाली | सन् : 1392 | माघ | 1 |
| तमिल | संवत : 2042 | थई | 2 |
| केरल | कोल्लम : 1161 | मकरम | 2 |
| नेपाली | संवत : 2042 | माघ | 2 |
| चैत्रादि | संवत : 2042 | पौष | शुक्ल 5 |
| कार्तिकादि | संवत : 2042 | पौष | शुक्ल 5 |

## पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि ____: 5
तिथि समाप्ति काल _____: 11:38:46
जन्म तिथि _____: 6
सूर्योदय कालीन नक्षत्र ____: पू०भाद्रपद
नक्षत्र समाप्ति काल _____: 15:48:39 घंटे
जन्म योग _____: उ०भाद्रपद
सूर्योदय कालीन योग ____: वरियान
योग समाप्ति काल _____: 07:40:11 घंटे
जन्म योग _____: परिघ
सूर्योदय कालीन करण ____: बालव
करण समाप्ति काल _____: 11:38:46 घंटे
जन्म करण _____: कौलव
भयात _____: 19:18:23
भभोग _____: 64:21:42
भोग्य दशा काल _____: शनि 13 वर्ष 2 मा 27 दि

## घात चक्र

मास _____: फाल्गुन
तिथि _____: 5-10-15
दिन _____: शुक्रवार
नक्षत्र _____: आश्लेषा
योग _____: वज्र
करण _____: चतुष्पाद
प्रहर _____: 4
वर्ग _____: गरुड़
लग्न _____: सिंह
सूर्य _____: मिथुन
चन्द्र _____: कुम्भ
मंगल _____: कर्क
बुध _____: कुम्भ
गुरु _____: सिंह
शुक्र _____: कन्या
शनि _____: वृष
राहु _____: तुला

# जन्म कुण्डली

## लग्न कुंडली

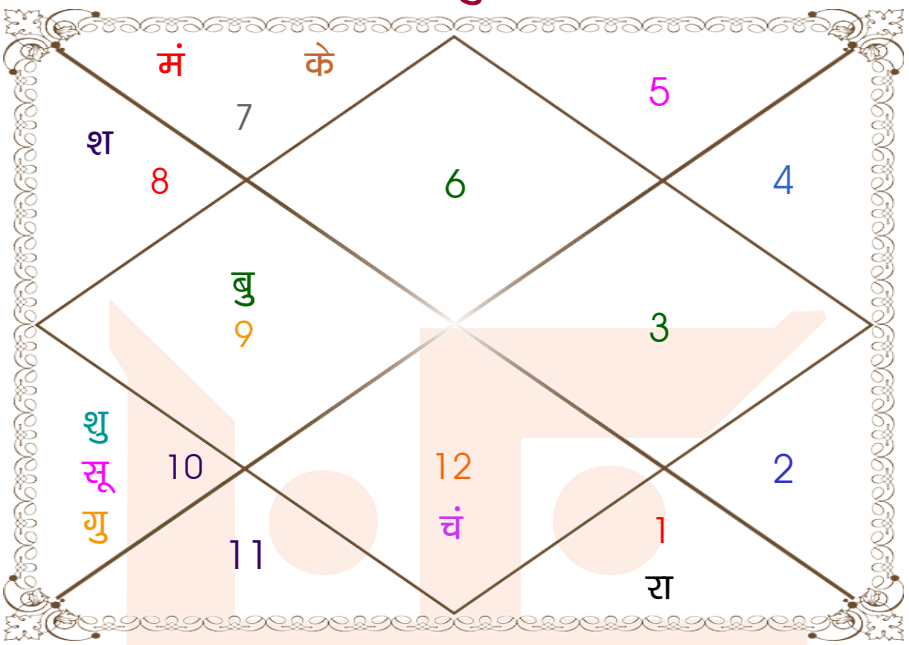


## चन्द्र कुंडली

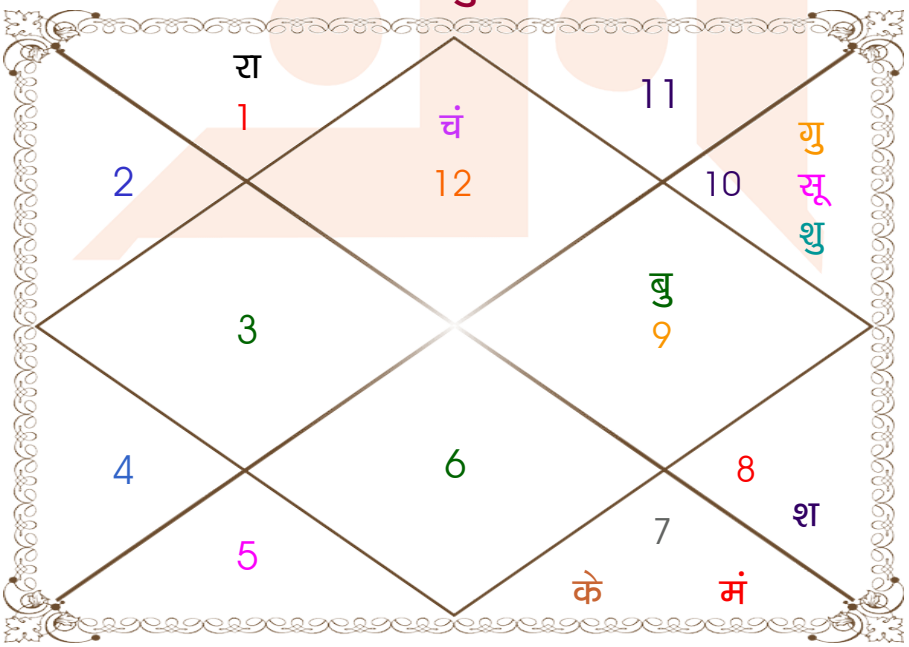

# लग्न कुण्डली और दशा

## लग्न कुंडली

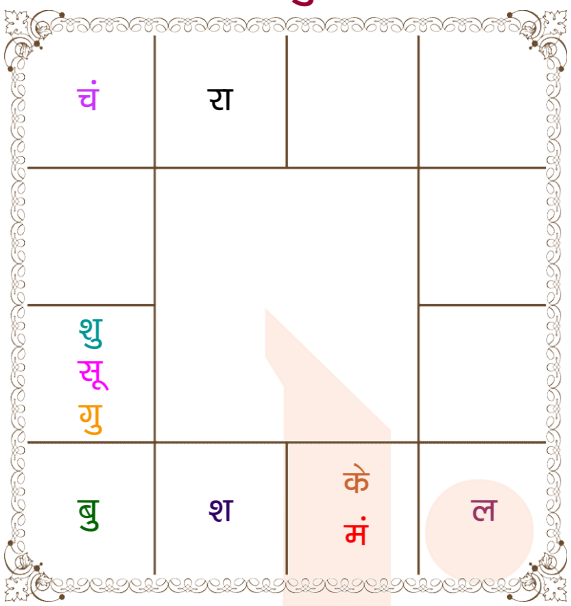


## लग्न कुंडली

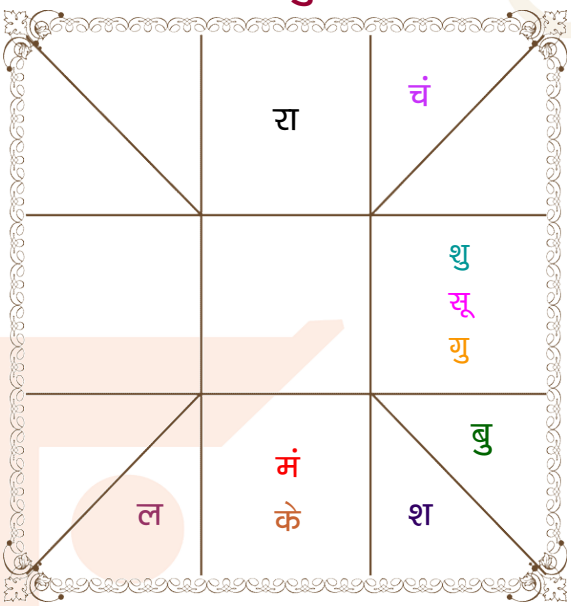


## विंशोत्तरी
## शनि 13वर्ष 2मा 27दि

**शनि**

**15/01/1986**

**14/04/2100**

| | |
|---|---|
| शनि | 14/04/1999 |
| बुध | 13/04/2016 |
| केतु | 14/04/2023 |
| शुक्र | 14/04/2043 |
| सूर्य | 13/04/2049 |
| चन्द्र | 14/04/2059 |
| मंगल | 14/04/2066 |
| राहु | 13/04/2084 |
| गुरु | 14/04/2100 |

## योगिनी
## भद्रिका 3वर्ष 5मा 24दि

**उल्का**

**11/07/2025**

**12/07/2031**

| | |
|---|---|
| उल्का | 11/07/2026 |
| सिद्धा | 11/09/2027 |
| संकटा | 10/01/2029 |
| मंगला | 11/03/2029 |
| पिंगला | 11/07/2029 |
| धान्या | 10/01/2030 |
| भ्रामरी | 10/09/2030 |
| भद्रिका | 12/07/2031 |

# ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

| ग्रह | व | अ | राशि | अंश | गति | नक्षत्र | पद | नं. | रा | न | अं. | स्थिति |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| लग्न | | | कन्या | 14:58:34 | 339:01:09 | हस्त | 2 | 13 | बुध | चंद्र | गुरु | --- |
| सूर्य | | | मक | 01:38:33 | 01:01:07 | उत्तराषाढ़ा | 2 | 21 | शनि | सूर्य | गुरु | शत्रु राशि |
| चंद्र | | | मीन | 07:22:28 | 12:30:02 | उ०भाद्रपद | 2 | 26 | गुरु | शनि | केतु | सम राशि |
| मंगल | | | तुला | 25:52:23 | 00:36:12 | विशाखा | 2 | 16 | शुक्र | गुरु | केतु | सम राशि |
| बुध | | अ | धनु | 21:26:18 | 01:33:58 | पूर्वाषाढ़ा | 3 | 20 | गुरु | शुक्र | गुरु | सम राशि |
| गुरु | | | मक | 27:51:08 | 00:13:39 | धनिष्ठा | 2 | 23 | शनि | मंगल | गुरु | नीच राशि |
| शुक्र | | अ | मक | 00:42:19 | 01:15:28 | उत्तराषाढ़ा | 2 | 21 | शनि | सूर्य | राहु | मित्र राशि |
| शनि | | | वृश्चि | 12:57:06 | 00:05:29 | अनुराधा | 3 | 17 | मंगल | शनि | राहु | शत्रु राशि |
| राहु | व | | मेष | 11:43:47 | 00:03:25 | अश्विनी | 4 | 1 | मंगल | केतु | बुध | शत्रु राशि |
| केतु | व | | तुला | 11:43:47 | 00:03:25 | स्वाति | 2 | 15 | शुक्र | राहु | शनि | सम राशि |
| हर्ष | | | वृश्चि | 26:39:42 | 00:03:10 | ज्येष्ठा | 3 | 18 | मंगल | बुध | गुरु | --- |
| नेप | | | धनु | 10:28:18 | 00:02:09 | मूल | 4 | 19 | गुरु | केतु | शनि | --- |
| प्लूटो | | | तुला | 13:31:39 | 00:00:52 | स्वाति | 3 | 15 | शुक्र | राहु | बुध | --- |
| दशम भाव | | | मिथु | 14:46:27 | -- | आर्द्रा | -- | 6 | बुध | राहु | केतु | -- |

व - वक्री  स - स्थिर
अ - अस्त  पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:39:35

## लग्न-चलित

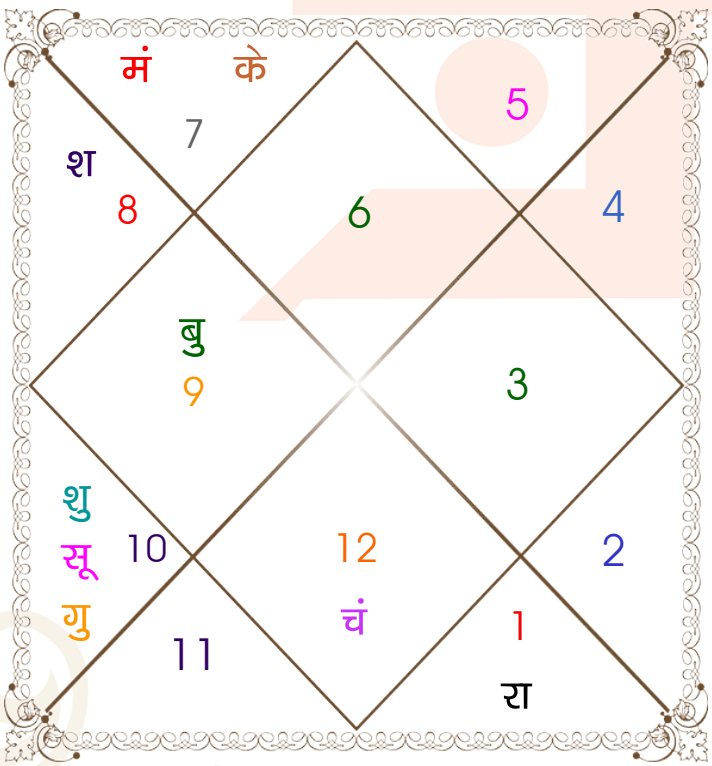


## चन्द्र कुंडली

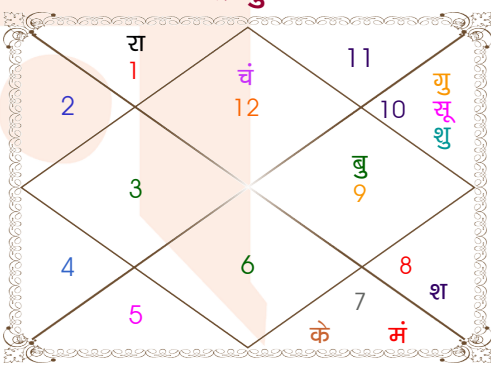


## नवमांश कुंडली

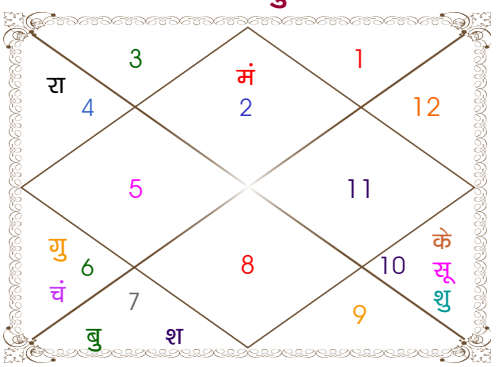

# चलित तथा निरयण भाव चलित

## चलित अंश

| भाव | भाव संधि | | भाव मध्य | |
|---|---|---|---|---|
| 1 | सिंह | 29:56:32 | कन्या | 14:58:34 |
| 2 | कन्या | 29:56:32 | तुला | 14:54:31 |
| 3 | तुला | 29:52:30 | वृश्चिक | 14:50:29 |
| 4 | वृश्चिक | 29:48:28 | धनु | 14:46:27 |
| 5 | धनु | 29:48:28 | मकर | 14:50:29 |
| 6 | मकर | 29:52:30 | कुम्भ | 14:54:31 |
| 7 | कुम्भ | 29:56:32 | मीन | 14:58:34 |
| 8 | मीन | 29:56:32 | मेष | 14:54:31 |
| 9 | मेष | 29:52:30 | वृष | 14:50:29 |
| 10 | वृष | 29:48:28 | मिथुन | 14:46:27 |
| 11 | मिथुन | 29:48:28 | कर्क | 14:50:29 |
| 12 | कर्क | 29:52:30 | सिंह | 14:54:31 |

## निरयण भाव चलित

| भाव | राशि | अंश |
|---|---|---|
| 1 | कन्या | 14:58:34 |
| 2 | तुला | 14:22:09 |
| 3 | वृश्चिक | 14:30:21 |
| 4 | धनु | 14:46:27 |
| 5 | मकर | 15:21:08 |
| 6 | कुम्भ | 15:54:31 |
| 7 | मीन | 14:58:34 |
| 8 | मेष | 14:22:09 |
| 9 | वृष | 14:30:21 |
| 10 | मिथुन | 14:46:27 |
| 11 | कर्क | 15:21:08 |
| 12 | सिंह | 15:54:31 |

## तारा चक्र

| जन्म | सम्पत | विपत | क्षेम | प्रत्यारि | साधक | वध | मित्र | अतिमित्र |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उ०भाद्रपद | रेवती | अश्विनी | भरणी | कृतिका | रोहिणी | मृगशिरा | आर्द्रा | पुनर्वसु |
| पुष्य | आश्लेषा | मघा | पू०फाल्गुनी | उ०फाल्गुनी | हस्त | चित्रा | स्वाति | विशाखा |
| अनुराधा | ज्येष्ठा | मूल | पूर्वाषाढ़ा | उत्तराषाढ़ा | श्रवण | धनिष्ठा | शतभिषा | पू०भाद्रपद |

## चलित कुंडली

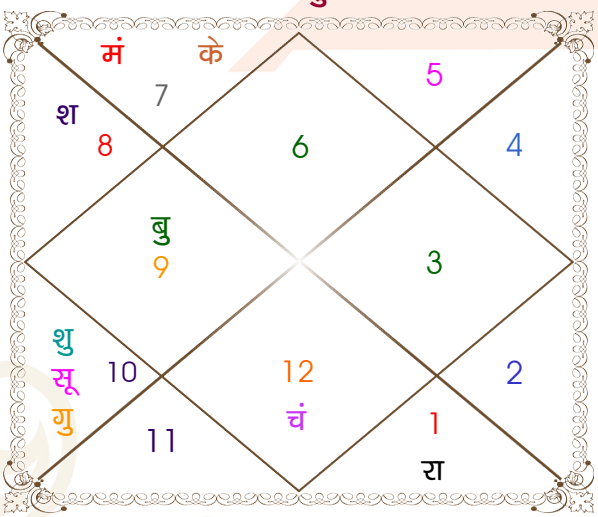


## भाव कुंडली

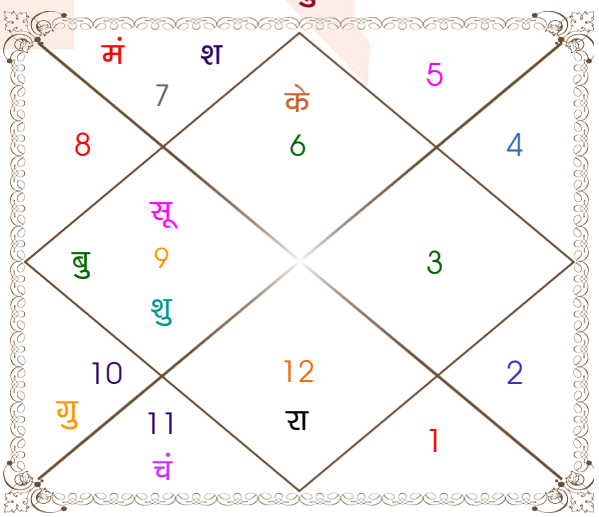

# कारक,अवस्था,रश्मि

| ग्रह | ------ कारक ------ | | | -------- अवस्था -------- | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | चर | स्थिर | बालादि | दीप्तादि | शयनादि | रश्मि | ग्रह बल |
| सूर्य | ज्ञाति | पितृ | मृत | खल | भोजन | 4.54 | 45 % |
| चंद्र | पुत्र | मातृ | वृद्ध | शान्त | निद्रा | 7.46 | 61 % |
| मंगल | अमात्य | भ्रातृ | मृत | शान्त | निद्रा | 2.93 | 28 % |
| बुध | भ्रातृ | ज्ञाति | वृद्ध | विकल | आगम | 0.00 | 69 % |
| गुरु | आत्मा | धन | बाल | भीत | नेत्रपाणि | 1.07 | 10 % |
| शुक्र | कलत्र | कलत्र | मृत | विकल | आगमन | 5.55 | 70 % |
| शनि | मातृ | आयु | युवा | खल | आगम | 4.36 | 31 % |
| राहु | --- | ज्ञान | कुमार | खल | आगम | 0.00 | 21 % |
| केतु | --- | मोक्ष | कुमार | शान्त | निद्रा | 0.00 | 21 % |
| कुल | | | | | | 25.91 | |

## तारा चक्र

| जन्म | सम्पत | विपत | क्षेम | प्रत्यारि | साधक | वध | मित्र | अतिमित्र |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उ०भाद्रपद | रेवती | अश्विनी | भरणी | कृतिका | रोहिणी | मृगशिरा | आर्द्रा | पुनर्वसु |
| पुष्य | आश्लेषा | मघा | पू०फाल्गुनी | उ०फाल्गुनी | हस्त | चित्रा | स्वाति | विशाखा |
| अनुराधा | ज्येष्ठा | मूल | पूर्वाषाढ़ा | उत्तराषाढ़ा | श्रवण | धनिष्ठा | शतभिषा | पू०भाद्रपद |

### चलित कुंडली

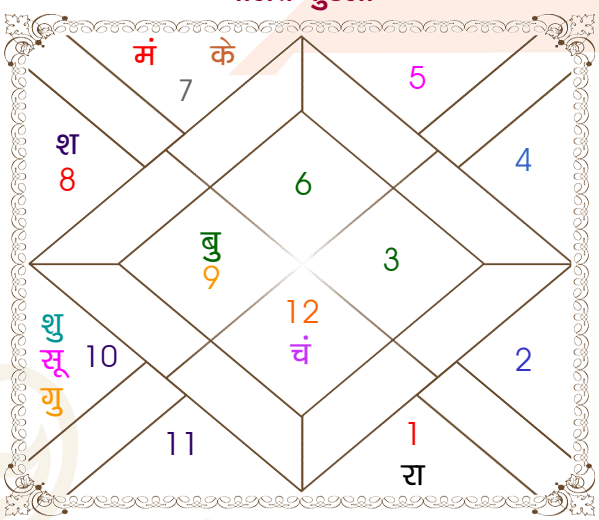


### लग्न-चलित

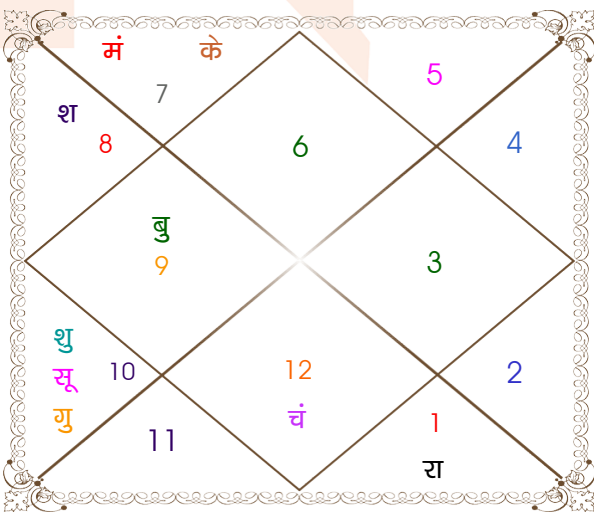

# विंशोत्तरी दशा

## भोग्य दशा काल : शनि 13 वर्ष 2 मास 27 दिन

| शनि 19 वर्ष | | बुध 17 वर्ष | | केतु 7 वर्ष | | शुक्र 20 वर्ष | | सूर्य 6 वर्ष | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 15/01/1986 | | 14/04/1999 | | 13/04/2016 | | 14/04/2023 | | 14/04/2043 | |
| 14/04/1999 | | 13/04/2016 | | 14/04/2023 | | 14/04/2043 | | 13/04/2049 | |
| | 00/00/0000 | बुध | 10/09/2001 | केतु | 09/09/2016 | शुक्र | 13/08/2026 | सूर्य | 01/08/2043 |
| | 15/01/1986 | केतु | 07/09/2002 | शुक्र | 09/11/2017 | सूर्य | 14/08/2027 | चंद्र | 31/01/2044 |
| केतु | 03/02/1987 | शुक्र | 08/07/2005 | सूर्य | 17/03/2018 | चंद्र | 13/04/2029 | मंगल | 07/06/2044 |
| शुक्र | 05/04/1990 | सूर्य | 14/05/2006 | चंद्र | 16/10/2018 | मंगल | 14/06/2030 | राहु | 02/05/2045 |
| सूर्य | 18/03/1991 | चंद्र | 14/10/2007 | मंगल | 14/03/2019 | राहु | 13/06/2033 | गुरु | 18/02/2046 |
| चंद्र | 16/10/1992 | मंगल | 10/10/2008 | राहु | 01/04/2020 | गुरु | 12/02/2036 | शनि | 31/01/2047 |
| मंगल | 25/11/1993 | राहु | 29/04/2011 | गुरु | 08/03/2021 | शनि | 14/04/2039 | बुध | 07/12/2047 |
| राहु | 01/10/1996 | गुरु | 04/08/2013 | शनि | 17/04/2022 | बुध | 12/02/2042 | केतु | 13/04/2048 |
| गुरु | 14/04/1999 | शनि | 13/04/2016 | बुध | 14/04/2023 | केतु | 14/04/2043 | शुक्र | 13/04/2049 |

| चंद्र 10 वर्ष | | मंगल 7 वर्ष | | राहु 18 वर्ष | | गुरु 16 वर्ष | | शनि 19 वर्ष | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 13/04/2049 | | 14/04/2059 | | 14/04/2066 | | 13/04/2084 | | 14/04/2100 | |
| 14/04/2059 | | 14/04/2066 | | 13/04/2084 | | 14/04/2100 | | 00/00/0000 | |
| चंद्र | 12/02/2050 | मंगल | 10/09/2059 | राहु | 25/12/2068 | गुरु | 01/06/2086 | शनि | 18/04/2103 |
| मंगल | 13/09/2050 | राहु | 28/09/2060 | गुरु | 20/05/2071 | शनि | 13/12/2088 | बुध | 26/12/2105 |
| राहु | 14/03/2052 | गुरु | 03/09/2061 | शनि | 26/03/2074 | बुध | 21/03/2091 | केतु | 16/01/2106 |
| गुरु | 14/07/2053 | शनि | 13/10/2062 | बुध | 13/10/2076 | केतु | 24/02/2092 | | 00/00/0000 |
| शनि | 12/02/2055 | बुध | 10/10/2063 | केतु | 31/10/2077 | शुक्र | 25/10/2094 | | 00/00/0000 |
| बुध | 13/07/2056 | केतु | 08/03/2064 | शुक्र | 31/10/2080 | सूर्य | 14/08/2095 | | 00/00/0000 |
| केतु | 12/02/2057 | शुक्र | 08/05/2065 | सूर्य | 25/09/2081 | चंद्र | 13/12/2096 | | 00/00/0000 |
| शुक्र | 13/10/2058 | सूर्य | 13/09/2065 | चंद्र | 27/03/2083 | मंगल | 19/11/2097 | | 00/00/0000 |
| सूर्य | 14/04/2059 | चंद्र | 14/04/2066 | मंगल | 13/04/2084 | राहु | 14/04/2100 | | 00/00/0000 |

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल शनि 13 वर्ष 3 मा 18 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

# विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

| शुक्र - शुक्र | | शुक्र - सूर्य | | शुक्र - चंद्र | | शुक्र - मंगल | | शुक्र - राहु | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 14/04/2023 | | 13/08/2026 | | 14/08/2027 | | 13/04/2029 | | 14/06/2030 | |
| 13/08/2026 | | 14/08/2027 | | 13/04/2029 | | 14/06/2030 | | 13/06/2033 | |
| शुक्र | 03/11/2023 | सूर्य | 01/09/2026 | चंद्र | 03/10/2027 | मंगल | 08/05/2029 | राहु | 25/11/2030 |
| सूर्य | 03/01/2024 | चंद्र | 01/10/2026 | मंगल | 08/11/2027 | राहु | 11/07/2029 | गुरु | 20/04/2031 |
| चंद्र | 13/04/2024 | मंगल | 22/10/2026 | राहु | 07/02/2028 | गुरु | 06/09/2029 | शनि | 10/10/2031 |
| मंगल | 23/06/2024 | राहु | 16/12/2026 | गुरु | 28/04/2028 | शनि | 12/11/2029 | बुध | 14/03/2032 |
| राहु | 23/12/2024 | गुरु | 03/02/2027 | शनि | 03/08/2028 | बुध | 12/01/2030 | केतु | 17/05/2032 |
| गुरु | 03/06/2025 | शनि | 02/04/2027 | बुध | 28/10/2028 | केतु | 06/02/2030 | शुक्र | 15/11/2032 |
| शनि | 13/12/2025 | बुध | 23/05/2027 | केतु | 03/12/2028 | शुक्र | 18/04/2030 | सूर्य | 09/01/2033 |
| बुध | 03/06/2026 | केतु | 14/06/2027 | शुक्र | 14/03/2029 | सूर्य | 09/05/2030 | चंद्र | 10/04/2033 |
| केतु | 13/08/2026 | शुक्र | 14/08/2027 | सूर्य | 13/04/2029 | चंद्र | 14/06/2030 | मंगल | 13/06/2033 |

| शुक्र - गुरु | | शुक्र - शनि | | शुक्र - बुध | | शुक्र - केतु | | सूर्य - सूर्य | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 13/06/2033 | | 12/02/2036 | | 14/04/2039 | | 12/02/2042 | | 14/04/2043 | |
| 12/02/2036 | | 14/04/2039 | | 12/02/2042 | | 14/04/2043 | | 01/08/2043 | |
| गुरु | 21/10/2033 | शनि | 13/08/2036 | बुध | 08/09/2039 | केतु | 09/03/2042 | सूर्य | 19/04/2043 |
| शनि | 24/03/2034 | बुध | 24/01/2037 | केतु | 07/11/2039 | शुक्र | 19/05/2042 | चंद्र | 29/04/2043 |
| बुध | 09/08/2034 | केतु | 02/04/2037 | शुक्र | 27/04/2040 | सूर्य | 09/06/2042 | मंगल | 05/05/2043 |
| केतु | 05/10/2034 | शुक्र | 12/10/2037 | सूर्य | 18/06/2040 | चंद्र | 14/07/2042 | राहु | 21/05/2043 |
| शुक्र | 17/03/2035 | सूर्य | 08/12/2037 | चंद्र | 12/09/2040 | मंगल | 08/08/2042 | गुरु | 05/06/2043 |
| सूर्य | 04/05/2035 | चंद्र | 15/03/2038 | मंगल | 12/11/2040 | राहु | 11/10/2042 | शनि | 22/06/2043 |
| चंद्र | 24/07/2035 | मंगल | 21/05/2038 | राहु | 16/04/2041 | गुरु | 07/12/2042 | बुध | 08/07/2043 |
| मंगल | 19/09/2035 | राहु | 11/11/2038 | गुरु | 01/09/2041 | शनि | 13/02/2043 | केतु | 14/07/2043 |
| राहु | 12/02/2036 | गुरु | 14/04/2039 | शनि | 12/02/2042 | बुध | 14/04/2043 | शुक्र | 01/08/2043 |

| सूर्य - चंद्र | | सूर्य - मंगल | | सूर्य - राहु | | सूर्य - गुरु | | सूर्य - शनि | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 01/08/2043 | | 31/01/2044 | | 07/06/2044 | | 02/05/2045 | | 18/02/2046 | |
| 31/01/2044 | | 07/06/2044 | | 02/05/2045 | | 18/02/2046 | | 31/01/2047 | |
| चंद्र | 17/08/2043 | मंगल | 08/02/2044 | राहु | 26/07/2044 | गुरु | 10/06/2045 | शनि | 14/04/2046 |
| मंगल | 27/08/2043 | राहु | 27/02/2044 | गुरु | 08/09/2044 | शनि | 26/07/2045 | बुध | 02/06/2046 |
| राहु | 24/09/2043 | गुरु | 15/03/2044 | शनि | 30/10/2044 | बुध | 05/09/2045 | केतु | 22/06/2046 |
| गुरु | 18/10/2043 | शनि | 04/04/2044 | बुध | 16/12/2044 | केतु | 22/09/2045 | शुक्र | 19/08/2046 |
| शनि | 16/11/2043 | बुध | 22/04/2044 | केतु | 04/01/2045 | शुक्र | 10/11/2045 | सूर्य | 05/09/2046 |
| बुध | 12/12/2043 | केतु | 30/04/2044 | शुक्र | 28/02/2045 | सूर्य | 25/11/2045 | चंद्र | 04/10/2046 |
| केतु | 23/12/2043 | शुक्र | 21/05/2044 | सूर्य | 16/03/2045 | चंद्र | 19/12/2045 | मंगल | 25/10/2046 |
| शुक्र | 22/01/2044 | सूर्य | 27/05/2044 | चंद्र | 13/04/2045 | मंगल | 05/01/2046 | राहु | 16/12/2046 |
| सूर्य | 31/01/2044 | चंद्र | 07/06/2044 | मंगल | 02/05/2045 | राहु | 18/02/2046 | गुरु | 31/01/2047 |

# विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

| सूर्य - बुध | | सूर्य - केतु | | सूर्य - शुक्र | | चंद्र - चंद्र | | चंद्र - मंगल | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 31/01/2047 | | 07/12/2047 | | 13/04/2048 | | 13/04/2049 | | 12/02/2050 | |
| 07/12/2047 | | 13/04/2048 | | 13/04/2049 | | 12/02/2050 | | 13/09/2050 | |
| बुध | 16/03/2047 | केतु | 15/12/2047 | शुक्र | 13/06/2048 | चंद्र | 09/05/2049 | मंगल | 24/02/2050 |
| केतु | 03/04/2047 | शुक्र | 05/01/2048 | सूर्य | 01/07/2048 | मंगल | 27/05/2049 | राहु | 28/03/2050 |
| शुक्र | 25/05/2047 | सूर्य | 11/01/2048 | चंद्र | 01/08/2048 | राहु | 11/07/2049 | गुरु | 26/04/2050 |
| सूर्य | 09/06/2047 | चंद्र | 22/01/2048 | मंगल | 22/08/2048 | गुरु | 21/08/2049 | शनि | 29/05/2050 |
| चंद्र | 05/07/2047 | मंगल | 30/01/2048 | राहु | 16/10/2048 | शनि | 08/10/2049 | बुध | 29/06/2050 |
| मंगल | 23/07/2047 | राहु | 18/02/2048 | गुरु | 04/12/2048 | बुध | 20/11/2049 | केतु | 11/07/2050 |
| राहु | 08/09/2047 | गुरु | 06/03/2048 | शनि | 30/01/2049 | केतु | 08/12/2049 | शुक्र | 15/08/2050 |
| गुरु | 19/10/2047 | शनि | 26/03/2048 | बुध | 23/03/2049 | शुक्र | 28/01/2050 | सूर्य | 26/08/2050 |
| शनि | 07/12/2047 | बुध | 13/04/2048 | केतु | 13/04/2049 | सूर्य | 12/02/2050 | चंद्र | 13/09/2050 |

| चंद्र - राहु | | चंद्र - गुरु | | चंद्र - शनि | | चंद्र - बुध | | चंद्र - केतु | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 13/09/2050 | | 14/03/2052 | | 14/07/2053 | | 12/02/2055 | | 13/07/2056 | |
| 14/03/2052 | | 14/07/2053 | | 12/02/2055 | | 13/07/2056 | | 12/02/2057 | |
| राहु | 04/12/2050 | गुरु | 18/05/2052 | शनि | 13/10/2053 | बुध | 26/04/2055 | केतु | 26/07/2056 |
| गुरु | 15/02/2051 | शनि | 03/08/2052 | बुध | 03/01/2054 | केतु | 27/05/2055 | शुक्र | 30/08/2056 |
| शनि | 13/05/2051 | बुध | 11/10/2052 | केतु | 06/02/2054 | शुक्र | 21/08/2055 | सूर्य | 10/09/2056 |
| बुध | 29/07/2051 | केतु | 08/11/2052 | शुक्र | 13/05/2054 | सूर्य | 16/09/2055 | चंद्र | 28/09/2056 |
| केतु | 30/08/2051 | शुक्र | 28/01/2053 | सूर्य | 11/06/2054 | चंद्र | 29/10/2055 | मंगल | 10/10/2056 |
| शुक्र | 30/11/2051 | सूर्य | 22/02/2053 | चंद्र | 29/07/2054 | मंगल | 28/11/2055 | राहु | 11/11/2056 |
| सूर्य | 27/12/2051 | चंद्र | 03/04/2053 | मंगल | 01/09/2054 | राहु | 14/02/2056 | गुरु | 10/12/2056 |
| चंद्र | 11/02/2052 | मंगल | 02/05/2053 | राहु | 27/11/2054 | गुरु | 23/04/2056 | शनि | 12/01/2057 |
| मंगल | 14/03/2052 | राहु | 14/07/2053 | गुरु | 12/02/2055 | शनि | 13/07/2056 | बुध | 12/02/2057 |

| चंद्र - शुक्र | | चंद्र - सूर्य | | मंगल - मंगल | | मंगल - राहु | | मंगल - गुरु | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 12/02/2057 | | 13/10/2058 | | 14/04/2059 | | 10/09/2059 | | 28/09/2060 | |
| 13/10/2058 | | 14/04/2059 | | 10/09/2059 | | 28/09/2060 | | 03/09/2061 | |
| शुक्र | 24/05/2057 | सूर्य | 22/10/2058 | मंगल | 23/04/2059 | राहु | 07/11/2059 | गुरु | 12/11/2060 |
| सूर्य | 23/06/2057 | चंद्र | 07/11/2058 | राहु | 15/05/2059 | गुरु | 28/12/2059 | शनि | 05/01/2061 |
| चंद्र | 13/08/2057 | मंगल | 17/11/2058 | गुरु | 04/06/2059 | शनि | 26/02/2060 | बुध | 22/02/2061 |
| मंगल | 18/09/2057 | राहु | 15/12/2058 | शनि | 27/06/2059 | बुध | 21/04/2060 | केतु | 14/03/2061 |
| राहु | 18/12/2057 | गुरु | 08/01/2059 | बुध | 19/07/2059 | केतु | 13/05/2060 | शुक्र | 10/05/2061 |
| गुरु | 09/03/2058 | शनि | 06/02/2059 | केतु | 27/07/2059 | शुक्र | 16/07/2060 | सूर्य | 27/05/2061 |
| शनि | 14/06/2058 | बुध | 04/03/2059 | शुक्र | 21/08/2059 | सूर्य | 04/08/2060 | चंद्र | 24/06/2061 |
| बुध | 08/09/2058 | केतु | 14/03/2059 | सूर्य | 29/08/2059 | चंद्र | 05/09/2060 | मंगल | 14/07/2061 |
| केतु | 13/10/2058 | शुक्र | 14/04/2059 | चंद्र | 10/09/2059 | मंगल | 28/09/2060 | राहु | 03/09/2061 |

# शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांको से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

| | |
|---|---|
| मूलांक | 6 |
| भाग्यांक | 4 |
| मित्र अंक | 3, 4, 6, 9 |
| शत्रु अंक | 1, 7, 8 |
| शुभ वर्ष | 24,33,42,51,60 |
| शुभ दिन | बुध, शुक्र |
| शुभ ग्रह | बुध, शुक्र |
| मित्र राशि | वृश्चिक, धनु |
| मित्र लग्न | धनु, वृष, कर्क |
| अनुकूल देवता | जगदम्बा |
| शुभ रत्न | पन्ना |
| शुभ उपरत्न | संगपन्ना, मरगज |
| भाग्य रत्न | हीरा |
| शुभ धातु | कांसा |
| शुभ रंग | हरित |
| शुभ दिशा | उत्तर |
| शुभ समय | सूर्योदय के बाद |
| दान पदार्थ | हाथी दाँत, कपूर, फल |
| दान अन्न | मूँग |
| दान द्रव्य | घी |

# ग्रह फल

## सूर्य

पंचमभाव में सूर्य हो तो जातक अल्पसन्तितिवान्, बुद्धिमान्, सदाचारी, रोगी, दुखी, शीघ्र क्रोधी एवं वंचक होता है।

मकर राशि में रवि हो तो जातक बहुभाषी, चंचल, झगड़ालू, दुराचारी, लोभी एवं परिश्रमी होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य की स्थिति पंचम भाव में है। अतः पिता के आप प्रिय रहेंगे एवं उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा। साथ ही उनकी आयु भी दीर्घ होगी। धन सम्पत्ति से वे सर्वदा सुसम्पन्न रहेंगे एवं जीवन में समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपकी यथाशक्ति सहायता करते रहेंगे। आपकी सन्तति के प्रति भी वे स्नेहशील रहेंगे तथा उनके पालन में अपनी पूर्ण रूचि प्रदर्शित करेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा एवं आदर का भाव रहेगा एवं उनकी आज्ञा का पालन भी आप करते रहेंगे। आपके परस्पर संबंध भी मधुर रहेंगे लेकिन यदा कदा आपसी मतभेदों में विभिन्नता होने से संबंधों में कटुता भी आएगी परन्तु कुछ समय बाद सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा। साथ ही जीवन में आप उनका पूरा ध्यान रखेंगे एवं उनकी आर्थिक तथा अन्य सहायता करने के लिए भी उद्यत रहेंगे एवं उन्हें किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगे।

## चन्द्र

सप्तमभाव में चन्द्रमा हो तो जातक सभ्य, धैर्यवान् नेता, विचारक, प्रावासी, जलयात्रा करने वाला, व्यापारी, अभिमानी, वकील, कीर्तिमान, शीतल स्वभाववाला एवं स्फूर्तिवान् होता है।

मीन राशि में चन्द्रमा हो तो जातक शिल्पकार, सुदेही, शास्त्रज्ञ, धार्मिक, अतिकामी और प्रसन्न मुख वाला होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा सप्तम भाव में स्थित हैं। अतः माता के आप प्रिय रहेंगे तथा उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा। धन सम्पत्ति से वे सर्वदा युक्त रहेंगी एवं जीवन में आपको सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अपना सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगी। आपके विवाह कराने में वे मुख्य भूमिका निभाएंगी तथा व्यापार आदि कार्यों में भी आपको सहयोग प्रदान करेंगी।

आप भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान प्रदर्शित करेंगे एवं उनकी सेवा तथा आज्ञा पालन करने के लिए नित्य तत्पर रहेंगे। आप के आपसी संबंध भी मधुर रहेंगे एवं परस्पर मतभेदों का भी अभाव रहेगा। साथ ही जीवन में उनको सर्वप्रकार का सहयोग भी प्रदान करने के लिए आप हमेशा तत्पर रहेंगे। इस प्रकार आप एक दूसरे के लिए सामान्य रूप से शुभ ही रहेंगे।

## मंगल

द्वितीय भाव में मंगल हो तो जातक कटुभाषी, नेत्रकर्ण रोगी, कटुतिक्त रसप्रिय, धर्मप्रेमी, चोर से भक्ति, कुटुम्ब क्लेश वाला, पशुपालक, निर्बुद्धि एवं निर्धन होता है।

तुला राशि में मंगल हो तो जातक प्रवासी, वक्ता, कामी, परधनहारी, उच्चाकांक्षी, लड़ाकू, कृपालु एवं परस्त्रियों की ओर झुकाव होता है।

आप के जन्म काल में मंगल द्वितीय भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं यदा कदा वे शारीरिक रूप से व्याकुलता की अनुभूति भी करते रहेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह भाव विद्यमान रहेगा। धनार्जन एवं विद्यार्जन संबंधी कार्यों में वे आपको पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे। साथ ही जीवन में अन्य महत्वपूर्ण एवं शुभ कार्यों में भी आपको उनका पूर्ण सहयोग एवं सद्भाव प्राप्त होगा।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह की भावना रहेगी। आपके आपसी संबंध मधुर होंगे परन्तु यदा कदा उनमें आपसी मतभेदों के कारण अनिश्चित काल के लिए कटुता या तनाव का वातावरण होगा। जीवन में आप हमेशा भाई बहिनों का सुख दुःख में ध्यान रखेंगे तथा अपनी ओर से हमेशा उन्हें पूर्ण आर्थिक एवं अन्य रूप में सहयोग प्रदान करते रहेंगे।

## बुध

चतुर्थभाव में बुध हो तो जातक पण्डित भाग्यवान् नीतिवान्, नीतिज्ञ, लेखक, विद्वान्, बन्धुप्रेमी, उदार, गतिप्रिय, आलसी , स्थूलदेही, वाहनसुखी एवं दानी होता है।

धनु राशि में बुध हो तो जातक विद्वान्, समाज में सम्मानित, गुणी, सुगठित शरीर, अविवेकी, अच्छा संगठनकर्त्ता, चतुर, ईमानदार, उदार, प्रसिद्ध, राजमान्य, लेखक, सम्पादक एवं वक्ता होता है।

## गुरु

पंचमभाव में गुरु हो तो जातक नीतिविशारद, सन्ततिवान्, सट्टे से धन प्राप्त करने वाला, कुलश्रेष्ठ, लोकप्रिय, कुटुम्ब में सबसे ऊँचा स्थान, ज्योतिषी एवं आस्तिक होता है।

मकर राशि में गुरु हो तो जातक प्रवासी, द्रव्यहीन, व्यर्थपरिश्रमी, चंचलचित्त, धूर्त्त, असभ्य आचरण, दुःखी एवं ईर्ष्यालु होता है।

## शुक्र

पंचम भाव में शुक्र हो तो जातक विद्वान्, प्रतिभाशाली, वक्ता, कवि, पुत्रवान्, लाभयुक्त, व्यवसायी, शत्रुनाशक, उदार, दानी, सद्गुणी, न्यायवान् एवं आस्तिक होता है।

मकर राशि में शुक्र हो तो जातक बलहीन, कृपण, ध्दयरोगी, दुखी, मानी, नीच

जाति की स्त्रियों में रुचि, सिद्धान्तहीन एवं अनैतिक चरित्र होता है।

## शनि

तृतीय भाव में शनि हो तो जातक नीरोगी, विद्वान् योगी, मल्ल, शीघ्रकार्यकर्ता, सभाचतुर, चंचल, भाग्यवान्, शत्रुहन्ता, एवं विवेकी होता है।

वृश्चिक राशि में शनि हो तो जातक संकीर्ण विचारों वाला, हिंसक, कठोरघ्दय, उतावला, कमजोर स्वास्थ्य, बुरी आदतें, दुःखी, विष से खतरा, निर्धन स्त्रीहीन, क्रोधी, कठोर एवं लोभी होता है।

## राहु

अष्टम भाव में राहु हो तो जातक क्रोधी, व्यर्थभाषी, मूर्ख, उदररोगी, कामी, पुष्टदेही एवं गुप्तरोगी होता है।

मेष राशि में राहु हो तो जातक-पराक्रमहीन, आलसी, अविवेकी एवं अनैतिक चरित्र होता है।

## केतु

द्वितीय भाव में केतु हो तो जातक अस्वस्था, कटुवचन बोलने वाला, मुंह के रोग, राजभीरु एवं विद्रोही होता है।

तुला राशि में केतु हो तो जातक कुष्ठरोगी, दुःखी, क्रोधी एवं कामी होता है।

# साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है । लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है । साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है ।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है । प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है । प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पडता है । द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पडता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है ।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है ।

### प्रथम चक्रः

| | | | |
|---|---|---|---|
| साढेसाती प्रथम ढैया | 05/03/1993-15/10/1993 | 10/11/1993-02/06/1995 | 10/08/1995-16/02/1996 |
| साढेसाती द्वितीय ढैया | 02/06/1995-10/08/1995 | 16/02/1996-17/04/1998 | ---------- |
| साढेसाती तृतीय ढैया | 17/04/1998-07/06/2000 | ---------- | ---------- |
| चतुर्थ स्थानस्थ ढैया | 23/07/2002-08/01/2003 | 07/04/2003-06/09/2004 | 13/01/2005-26/05/2005 |
| अष्टम स्थानस्थ ढैया | 15/11/2011-16/05/2012 | 04/08/2012-02/11/2014 | ---------- |

### द्वितीय चक्रः

| | | | |
|---|---|---|---|
| साढेसाती प्रथम ढैया | 29/04/2022-12/07/2022 | 17/01/2023-29/03/2025 | ---------- |
| साढेसाती द्वितीय ढैया | 29/03/2025-03/06/2027 | 20/10/2027-23/02/2028 | ---------- |
| साढेसाती तृतीय ढैया | 03/06/2027-20/10/2027 | 23/02/2028-08/08/2029 | 05/10/2029-17/04/2030 |
| चतुर्थ स्थानस्थ ढैया | 31/05/2032-13/07/2034 | ---------- | ---------- |
| अष्टम स्थानस्थ ढैया | 28/01/2041-06/02/2041 | 26/09/2041-11/12/2043 | 23/06/2044-30/08/2044 |

### तृतीय चक्रः

| | | | |
|---|---|---|---|
| साढेसाती प्रथम ढैया | 25/02/2052-14/05/2054 | 02/09/2054-05/02/2055 | ---------- |
| साढेसाती द्वितीय ढैया | 14/05/2054-02/09/2054 | 05/02/2055-07/04/2057 | ---------- |
| साढेसाती तृतीय ढैया | 07/04/2057-27/05/2059 | ---------- | ---------- |
| चतुर्थ स्थानस्थ ढैया | 11/07/2061-13/02/2062 | 07/03/2062-24/08/2063 | 06/02/2064-09/05/2064 |
| अष्टम स्थानस्थ ढैया | 04/11/2070-05/02/2073 | 31/03/2073-23/10/2073 | ---------- |

### शनि का ढैया फल

| ढैया के प्रकार | फल | क्षेत्र |
|---|---|---|
| साढेसाती प्रथम ढैया | शुभ | शत्रु व रोग मुक्ति |
| साढेसाती द्वितीय ढैया | शुभ | दम्पति |
| साढेसाती तृतीय ढैया | अशुभ | दुर्घटना |
| चतुर्थ स्थानस्थ ढैया | शुभ | व्यावसाय |
| अष्टम स्थानस्थ ढैया | शुभ | धन |

# साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

**ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।।**

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ऊँ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।**
**उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

**ऊँ हों जूं सः ऊँ भूर्भुव स्वः ऊँ।।**

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें । लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डन्ट बनाकर धारण करें ।

**ऊँ शं शनैश्चराय नमः।**

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है ।